कोटा, राजस्थान में होने वाली अनंत चतुर्दशी शोभा यात्रा के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

अनंत चतुर्दशी शोभा यात्रा के सम्मानित आयोजकगण और सदस्यगण;

विशिष्ट अतिथिगण और भक्तजनों:

अनंत चतुर्दशी शोभा यात्रा के इस शुभ अवसर पर आज आप सब के बीच उपस्थित होना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। हमारे देश के सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य में इस शोभायात्रा का बहुत महत्व है और इस भव्य आयोजन में शामिल होना मेरा सौभाग्य है।

आप सभी जानते हैं कि भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को अनंत चतुर्दशी का पर्व मनाया जाता है।

यह पर्व भगवान विष्णु को समर्पित होता है और इसका असीम आध्यात्मिक महत्व है। इस दिन भक्तजन उपवास रखते हैं और भगवान विष्णु के अनंत रूपों की आराधना करते हैं। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा के पश्चात कलाई पर चौदह गांठों वाला पवित्र अनंत सूत्र बाँधा जाता है। प्रत्येक गाँठ भगवान विष्णु के एक अलग रूप का प्रतिनिधित्व करती है, जो जीवन के हर पहलू में उनकी दिव्य उपस्थिति और उनके संरक्षण को दर्शाता है।

महाभारत ग्रंथ में भी इस पर्व का उल्लेख है। भगवान कृष्ण ने युधिष्ठिर को वनवास के दौरान अपने कष्टों और संकटों से मुक्ति के लिए अनंत व्रत करने की सलाह दी थी। ऐसा माना जाता है कि जो लोग यह व्रत रखते हैं उन्हें ईश्वर का अनंत आशीर्वाद प्राप्त होता है और उनकी सभी परेशानियों का अंत हो जाता है।

अनंत चतुर्दशी दस दिन तक पूरे देश में बड़े उत्साह के साथ मनाए जाने वाले गणेश चतुर्थी उत्सव के समापन का भी प्रतीक है। भगवान गणेश को हमारे समाज में ज्ञान, समृद्धि और सौभाग्य का देवता माना जाता है । भगवान गणेश की पूजा से सभी बाधाएं दूर होती हैं और किसी भी नए कार्य में सफलता मिलती है। अनंत चतुर्दशी पर जलाशयों में भगवान गणेश की मूर्तियों के विसर्जन के साथ ही दस दिन तक चलने वाले गणेश चतुर्थी उत्सव का समापन होता है। भक्तजन भगवान गणेश की मूर्ति का विसर्जन करते हुए यह प्रार्थना करते हैं कि भगवान अगले वर्ष फिर से सुख-समृद्धि और खुशियाँ लेकर उनके घर पधारें।

आज, गणेश पूजा धार्मिकता और आध्यात्मिक उत्साह के साथ ही एक ऐसे उत्सव का प्रतीक बन गई है, जिसमें पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं को अपनाने पर जोर दिया जाता है।

इन उत्सवों में उपयोग किए जाने वाले प्लास्टिक के पर्यावरण पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव से बचने के लिए, कई राज्य अब स्थायी समाधानों को अपना रहे हैं। इस पर्यावरण-जागरूक दृष्टिकोण के अनुरूप, असम ने परंपरा और पर्यावरणीय जिम्मेदारी दोनों के लिए प्रतिबद्धता दिखाते हुए बांस से तैयार किए गए पंडालों के साथ गणेश पूजा मनाने का विकल्प चुना है। मैं कोटा शहर के लोगों से पर्यावरण के अनुकूल गणेश की मूर्तियों का उपयोग करने का आग्रह करता हूं। इसके अलावा, यह त्यौहार हमें स्थानीय कारीगरों, शिल्पकारों और छोटे व्यवसायों द्वारा बनाए गए उत्पादों को खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

अनंत चतुर्दशी के उत्सव में शोभा यात्रा का विशेष महत्व है, जो लगभग चार किलोमीटर तक चलने वाला रंगों और उत्साह से भरा हुआ जुलूस है। यह जुलूस सूर्य पोल गेट, कथूनी पोल, सब्जी मंडी, रामपुरा और किशोर सागर सहित विभिन्न स्थानों से होकर गुजरता है।

इस शोभा यात्रा में सांस्कृतिक और सामाजिक संदेशों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को दर्शाने वाली खूबसूरत झांकियों को देखना अत्यंत ही आनंदपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त, इस जुलूस में विभिन्न अखाड़ों के प्रतिभागियों द्वारा शक्ति और चपलता का प्रदर्शन किया जाता है। यहाँ की गलियां 'जय गणेश' के उद्घोष और पारंपरिक ढोल की जीवंत थाप तथा डीजे पर बजने वाले संगीत से सराबोर हो जाती हैं।

जुलूस के रास्ते में लगे खाने-पीने के स्टालों पर विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट स्नैक्स जैसे पकोड़े, कचौड़ी, पूड़ी - सब्जी और जलेबी जैसी विभिन्न मिठाइयां तथा ताजे फल उपलब्ध होते हैं। इस दौरान लोग मिलजुल कर इस उत्सव को मनाते हैं और भारतीय व्यंजनों का आनंद उठाते हैं। इसके अलावा, इस जुलूस में भाग लेने वाले सभी लोगों तथा दर्शकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर पहलू को ध्यान में रखते हुए कड़ी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गई है।

साथ ही, आयोजन समिति ने जुलूस को सुव्यवस्थित और सुरक्षित बनाने के लिए विभिन्न स्थानों पर सैकड़ों स्वयंसेवकों को नियुक्त किया है।

मैं इस अवसर पर, अनंत चतुर्दशी शोभा यात्रा के सफल आयोजन के लिए सभी सदस्यों और विशिष्ट पदाधिकारियों को धन्यवाद देता हूं । इस जुलूस में कोटा के सभी वर्गों के लोगों की उत्साहपूर्ण भागीदारी को देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है । मेरा मानना है कि समाज में इस तरह के त्यौहारों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इस तरह की बड़ी सभा का आयोजन समाज की लोक सांस्कृतिक भावना को पुनर्जीवित करता है और साथ ही, ऐसी बड़ी सभा में शामिल होने वाले प्रत्येक व्यक्ति में मन में उत्साह का भी संचार होता है। इस तरह के आयोजन की सामाजिक समानता और सद्भावना को बढ़ावा देने में भी प्रभावी भूमिका होती है।

भारत ने इस वर्ष अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया। हमने चंद्रयान -3 का सफल प्रक्षेपण देखा, जिसने कम लागत वाले अंतरिक्ष मिशनों के लिए भारत की क्षमता को साबित किया है, और साथ ही हमने 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' थीम पर जी20 के नई दिल्ली शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन भी किया है। यही 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' का दृष्टिकोण है,

भारत की जी20 अध्यक्षता वास्तव में जन-केंद्रित थी और यह एक राष्ट्रीय प्रयास के रूप में उभर कर सामने आई। जी20 देशों के बीच सहयोग और एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए, भारत की संसद 12-14 अक्तूबर 2023 से जी20 देशों की संसदों के अध्यक्षों के नौवें शिखर सम्मेलन (पी20) और जी20 संसदीय मंच की मेजबानी करने जा रही है। हमारा संकल्प है कि वर्ष 2047 में आजादी के 100 साल पूरे होने के समय हमारा भारत एक विकसित और शक्तिशाली राष्ट्र बने।

संसद की कार्रवाई को नए भवन में शुरू करने से पहले देश के लोग भारत की 75 वर्षों की संसदीय यात्रा के उपलक्ष्य में भारत की संसद में आयोजित एक विशेष सत्र के भी साक्षी बने। संसद के नए भवन का उद्घाटन हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं के विकास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है । मौजूदा संसद भवन से नए भवन में जाना केवल स्थान परिवर्तन मात्र नहीं है; यह हमारे दृष्टिकोण में बदलाव, भविष्य के विजन और हमारी समृद्ध विरासत के प्रति श्रद्धांजलि को भी दर्शाता है। संसद का नया भवन हमारे देश की ललित कला, संस्कृति और विविधता से सुसज्जित है। यह हमारी परंपराओं और मूल्यों को आत्मसात करते हुए आधुनिकता को अपनाने के हमारे दृढ़ संकल्प का प्रतिबिंब है।

इस सत्र के दौरान, संविधान में संशोधन और लोक सभा तथा राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण प्रदान करने के लिए एक ऐतिहासिक कानून नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 (महिला आरक्षण विधेयक) पारित किया गया। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि यह कानून राज्य और राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर नीति निर्माण में जनप्रतिनिधि के रूप में महिलाओं की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा ।

हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हमेशा न केवल महिलाओं के विकास पर अपितु महिलाओं के नेतृत्व में विकास पर जोर देते रहे हैं । उनके इस दृष्टिकोण के अनुरूप हमने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, समेकित बाल विकास योजनाएं, उज्ज्वला योजना, सुकन्या समृद्धि

योजना, स्वाधार गृह (मुश्किल हालातों में जी रही महिलाओं के लिए योजना), आदि जैसे प्रमुख कार्यक्रम शुरू किए हैं। वास्तव में, इस तरह की सभी पहलों के द्वारा हमारे समाज में लड़कियों के समग्र विकास; और उन्हें विकास प्रक्रिया में बराबर का भागीदार बनाने के लिए आज हर संभव प्रयास किया जा रहा है। इस तरह के आयोजन सरकारी पहलों के लिए प्रेरक का काम करते हैं, इसलिए हमें इस तरह के समारोहों की सराहना करनी चाहिए और इनमें पूरे उत्साह के साथ भाग लेना चाहिए।

यह समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि अनंत चतुर्दशी सिर्फ एक धार्मिक पर्व नहीं है,अपितु यह हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब भी है। यह भेदभाव से परे समाज के विभिन्न वर्गों की एकता और भक्ति की भावना का प्रतीक है।

अंत में, अनंत चतुर्दशी के पर्व और भगवान गणेश को विदाई देने के इस विशेष अवसर पर, हम सभी को अपने जीवन में ज्ञान, समृद्धि और एकता के मूल्यों को आत्मसात करना चाहिए। मेरी कामना है कि हम सभी को जीवन में सफलता मिले और हमारे जीवन में सुख, शांति और प्रसन्नता का वास हो। धन्यवाद, भगवान विष्णु एवं भगवान गणेश का आशीर्वाद सदैव हम सभी पर बना रहे।

———